याद करूँ बाबा तुझे तो माया मुझे सताती है।
तुझसे हाथ छुड़ाकर वो अपने पास बुलाती है।
तरह तरह के रूपों में मुझको बहुत लुभाती है।
उसके चक्कर में पड़ते ही मुझसे जीत जाती है।
ये रोज ठानता हूँ कि माया से बचकर रहूँगा मैं।
बाबा की श्रीमत पर पावन बनकर रहूँगा मैं।
ना जाने किस कौने से माया शत्रु आ जाती है।
मेरे मन की सारी शक्ति छीनकर ले जाती है।
हो जाता हूँ निढ़ाल शक्तिहीन अनुभव होता है।
माया से हार खाते ही दिल मेरा बहुत रोता है।
जानता हूँ कि आत्मा का अभ्यास नहीं है मेरा।
इसीलिए माया दुश्मन ने चारों तरफ से है घेरा।
आज फिर संकल्प से खुद को जानूंगा आत्मा।
महसूस करूँगा हर पल मेरे संग है परमात्मा।

हारेगी माया मुझसे वो दिन भी कभी आएगा।
जीतकर माया से जीवन सुखमय बन जाएगा।
होगी अपने चारों तरफ खुशियों की हरियाली।
प्यार होगा सारे जग में होगी भरपूर खुशहाली